Date: - 23/05 /2020.
Day: - Saturday, Time: - 10:30 to 11:20.
Class:- B.Ed. session (2019 21) 1st year. Subject: - contemporary India and Education. Paper:-2 Topic:-

प्लेटो (PLATO)

प्लेटो का जन्म 427 ईसा पूर्व में एथेंस में एक कुलीन परिवार में हुआ था।
माता का नाम : परीकिटयानी
पिता का नाम : अरिस्टन
प्लेटो का वास्तविक नाम अरिस्टूप्लीज था।
उनके चौड़े कंधों के कारण उन्हें प्लेटो का नाम दिया गया था।
लगभग 20 वर्ष की आयु में प्लेटो ने सुकरात का शिष्युत्व ग्रहण किया परंतु 399 ईसा पूर्व उसके जीवन में एक नया मोड़ आया। प्लेटो ने अपने जीवन में यूनान के इतिहास का एक अत्यंत नाजुक दौर देखा था। उसने अपनी आंखों से एथेन्स को स्पार्टा के सामने घुटने टेकते हुए देखा था। उसने अपने प्रियगुरु और अपनी दृष्टि में श्रेष्ठतम मानव सुकरात को विष का प्याला पीते हुए देखा। उसने एथेंस मे नैतिक आदर्शों का पराभाव देखा और उसने सार्वजनिक क्षेत्र के इन बुराइयों को सही करने का निश्चय किया।
प्लेटो बाद में प्राचीन यूनानी राजनीतिक दार्शनिक बन गए। प्लेटो को राजनीतिक चिंतन का जनक कहा जाने लगा क्योंकि उन्होंने ही राज्य का सर्वप्रथम व्यवस्थित अध्ययन प्रारंभ किया। प्लेटो आदर्शवादी विचारधारा के प्रथम प्रवक्ता रहे। जिन्होंने राज्य की सर्वव्यापकता तथा अनिवार्यता का समर्थन किया वस्तुत : उन्होंने राज्य को नैतिक आधार प्रदान किया। प्लेटो की रचनाओं में निगमनात्मक पद्धति का व्यापक प्रयोग दिखता है। उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना ***"द रिपब्लिक"*** है। जिसमें राजनीतिक सिद्धांतों को एक आदर्श राज्य की परिकल्पना में प्रतिपादित किया गया है। प्लेटो आदर्शवादियों के राजनीतिक विचारक भी रहे। उन्होंने विचारकों के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य भी किया। प्लेटों को परिवर्तनवादी कहने का कारण यह भी है कि उन्होंने एक व्यवस्था को बिल्कुल परिवर्तित करते हुए उसके स्थान पर एक नवीन व्यवस्था को प्रतिस्थापित करने का सैद्धांतिक प्रयास किया। प्लेटो आदर्शवादी तथा क्रांतिकारी चिंतक ही नहीं एक नारीवादी चिंतक भी रहे।

प्लेटो का शिक्षा दर्शन :--

1. प्लेटो के शिक्षा संबंधी विचार उसकी कृतियों "***द रिपब्लिक"*** तथा ***"द लाग"*** में प्रकट होते हैं।
2. ***द रिपब्लिक*** शिक्षा संबंधी विचारों पर सबसे पहली पुस्तक है।

3. ***द रिपब्लिक*** में अज्ञानता की सारी बुराइयों की जड़ बताई गई।

4. ***द रिपब्लिक*** की रचना प्लेटो ने यौवन काल में की थी।
5. ज्यो-ज्यो प्लेटो के विचार परिवर्तित होते गए त्यो- त्यो वह शिक्षा संबंधी विचारों में परिवर्तन करते गए।
6. प्लेटो समाज के कल्याण का आधार शिक्षा को ही बताते हैं।

शिक्षा का अर्थ :-

1. प्लेटो ने शिक्षा को नैतिक प्रशिक्षण की प्रक्रिया माना है।
2. सुकरात ने सद्गुणों को ज्ञान के रूप में देखा और उसके अनुसार ज्ञान ही सद्गुण है।
3. प्लेटो ने सुकरात के विचारों को आगे बढ़ाते हुए ज्ञान और सद्गुण में भेद किया।
4. प्लेटो के अनुसार प्रमुख सद्गुण 4 हैं बुद्धिमत्ता,साहस,संयम और न्याय।
5. सामाजिक न्याय की स्थापना किस प्रक्रिया द्वारा की जाती है वहशिक्षा ही है।
6. जो गुण समाज के लिए आवश्यक है वही व्यक्ति के लिए भी आवश्यक है।
7. सभी काल के प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक ने प्लेटो की इस सूची का विरोध किया।
8. अपनी अंतिम पुस्तक "राज नियम" में वह कहते है कि ***"शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो शिशुओं में उचित आदतों के निर्माण के द्वारा सद्गुणों को उत्पन्न करता है।"***

शिक्षा के कार्य तथा उद्देश्य :-

प्लेटो के अनुसार प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:
प्लेटो के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पूर्णता की अवस्था को प्राप्त करना है।
उनके अनुसार शिक्षा का समस्त कार्य ज्ञान को रखना नहीं वरन उस सर्वोत्तम गुणों को बाहर निकालना है जो आत्मा में अंतर्निहित है और यह कार्य आत्मा को लक्ष्य की ओर निर्देशित करके हो सकता है।
संक्षेप में प्लेटो के अनुसार शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. राज्य की एकता की रक्षा करना।
2. गुरु अथवा नागरिक दक्षता का विकास करना।
3. सौंदर्यात्मक संवेदन शीलता का विकास करना।
4. सत्यम शिवम सुंदरम के प्रति प्रेम उत्पन्न करना तथा अनुभूति प्राप्त करना।
5. व्यक्ति के व्यक्तित्व का सामंजस्य पूर्ण विकास करना।
6. बालकों के सामंजस्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए उन्हें तैयार करना।
7. स्वाशासित व्यक्तियों का निर्माण करना।

पाठ्यक्रम :

पाठ्यक्रम के संबंध में प्लेटो ने शिक्षा को तीन भागों में बांटा है एवं उसके अनुरूप पाठ्यक्रम निर्धारण पर बल दिया है :

1. **प्राथमिकशिक्षा**: प्रारंभिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में खेलकूद, व्यायाम, संगीत, गणित, इतिहास तथा विज्ञान को स्थान प्रदान किया।
2. **माध्यमिक शिक्षा:** इस स्तर पर पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्लेटो ने गणित, कविता, संगीत, शिष्टाचार, धर्मशास्त्र एवं सैन्य प्रशिक्षण पर बल दिया।
3. **उच्चशिक्षा:** इस स्तर पर पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्लेटो ने दर्शन नीति शास्त्र मनोविज्ञान,कानून एवं आध्यात्मिक शिक्षा को महत्व दिया।

शिक्षणविधि : प्लेटो ने शिक्षण विधियों में अपने गुरु सुकरात की संवाद विधि को ही अपनाया था। संवाद से तात्पर्य विचारवाद व्यक्तियों का वाद-विवाद तथा तर्क युक्त स्पष्टीकरण से है। इसके अलावा प्लेटो ने बच्चों की शिक्षा के लिए खेल-विधि, अनुकरण विधि एवं कहानी विधि को अपनाने पर बल दिया था। उच्च शिक्षा पर प्लेटो ने स्वअध्याय विधि तथा वार्तालाप विधि को स्वीकार करने पर बल दिया था।

शिक्षक : प्लेटो स्वयं द्वारा स्थापित एकादमी मे स्वयं एक शिक्षक के रूप में कार्य किया। इस कारण उन्होंने अपेक्षा की थी कि सभी शिक्षकों में आदर्शगुणों का समावेश होना चाहिए और शिक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों को निष्ठापूर्वक तथा ईमानदारी से करना चाहिए। जिससे दूसरे लोग भी इसका अनुसरण कर सके।

अनुशासन : प्लेटो दंडात्मक अनुशासन के समर्थक प्रतीत होते हैं। इसलिए वे बालकों से अपेक्षा करते हैं कि वह शिक्षक के आदेशों का अनुपालन करें यदि छात्र अनुशासनहीनता करे तो शिक्षक को उसे दंडित करना चाहिए प्लेटो का विश्वास है कि कठोर नियंत्रण एवं अनुशासित जीवन जीने से ही सद्गुणों का विकास संभव है।